शिक्षाशास्त्री – निर्देशिका

सेमेस्टर पाठ्यक्रम प्रारूप

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः

श्रुतम् मे गोपाय

सत्र २०२५-२०२६ से प्रवृत्त

शिक्षाशास्त्री–(बी०एड्०)

निर्देशिका एवं पाठ्यक्रम प्रारूप

07.8.2024

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

शिक्षाशास्त्री – निर्देशिका
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रवेश –

1. उत्तर प्रदेश शासन/विश्वविद्यालय की नियम व्यवस्था के अनुसार प्रवेश लिया जायेगा।

2. शिक्षाशास्त्री में प्रवेश के लिये निम्नलिखित अर्हताएं होनी चाहिए –
   i. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्नातक (शास्त्री) परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

   अथवा

   ii. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रयोजन के लिये मान्य किसी अन्य विश्वविद्यालय की स्नातक स्तर पर तीनों वर्षो में मुख्य विषय के रूप में संस्कृत के साथ स्नातक उपाधि।
   iii. स्नातक परीक्षा में प्रवेश हेतु अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थियों के अतिरिक्त अन्य अभ्यर्थियों को 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।
   iv. शासन द्वारा समय–समय पर किये जाने वाले संशोधन भी आवश्यक रूप से पालनीय होगें।

3. **प्रवेश का निरस्तीकरण–**

i. लगातार बिना लिखित सूचना के 15 दिन तक अनुपस्थित रहने की दशा में अभ्यर्थी का प्रवेश निरस्त समझा जायेगा।

ii. शिक्षाशास्त्री के अध्ययन काल में प्रवेशार्थी कोई भी पूर्णकालिक या अंशकालिक कार्य जिसमें वेतन मिलने की सुविधा हो, स्वीकार नहीं कर सकता। ऐसा करने पर प्रवेशार्थी का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

iii. प्रवेशार्थी का प्रवेश अस्थायी (Provisional) होगा। अध्ययन/परीक्षा पूर्णता के अनन्तर यदि उसके द्वारा किसी भी प्रकार का तथ्य गोपन करके अथवा असत्य सूचना पर प्रवेश लिया गया है तो उसका प्रवेश स्वंतः निरस्त हो जायेगा।

iv. अध्ययन/प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रवेशार्थी के लिए नियमो एवं अनुशासन का पालन करना आवश्यक होगा। अनुशासनहीनता की स्थिति में छात्र/छात्रा का प्रवेश निरस्त कर दिया जायेगा।

4. शिक्षाशास्त्री परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित अर्हता अनिवार्य है –
   राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिसूचना 2014 के अनुपालन में सत्र 2015–16 से शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम द्विवर्षीय कर दिया गया है। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में चार सेमेस्टर होंगे। प्रत्येक सेमेस्टर के प्रश्नपत्रों की परीक्षा उस सेमेस्टर के अन्त में ली जायेगी।
   प्रत्येक सेमेस्टर की परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये निम्नलिखित शर्ते अनिवार्य है–
   (क) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय अथवा इस विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय में निर्धारित शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम में नियमित रूप से अध्ययन किया हो।
   (ख) कक्षादि व्याख्यानों में जिसने 80 प्रतिशत उपस्थिति अर्जित की हो।
   (ग) समय से शुल्क का भुगतान किया हो।
   (घ) उसका आचरण एवं व्यवहार उत्तम हो।

(ङ) प्रत्येक वर्ष की प्रत्येक सेमेस्टर के लिए परीक्षा हेतु निर्धारित अर्हता पूर्ण करता हो। आन्तरिक मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्मिलित हुआ हो एवं प्रायोगिक कार्यों एवं दत्तकार्यों को विधिवत पूरा किया हो, वह शिक्षाशास्त्री उपाधि निमित्त सेमेस्टर विशेष की परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है। प्रत्येक विद्यार्थी को सैद्धान्तिक, प्रायोगिक, व्यावसायिक क्षमता संवर्धन, इन्टर्नशिप एवं अन्य क्रियाकलापों में भाग लेना अनिवार्य है।

(च) किसी कारणवश सेमेस्टर की परीक्षा से वंचित छात्र अगले वर्ष उसी सेमेस्टर की परीक्षा में सशुल्क (शिक्षण शुल्क के अतिरिक्त शेष पूरा शुल्क जमा करके) प्रायोगिक एवं दत्तकार्य पूरा करने पर, विभागाध्यक्ष की संस्तुति पर कुलपति की अनुमति से सम्मिलित हो सकता है। इसी प्रकार अन्य सेमेस्टर की परीक्षा में किसी कारणवश् परीक्षा से वंचित छात्रों के सम्बन्ध में भी उपरोक्त व्यवस्था ही लागू रहेगी।

5. सत्र/बैच का निर्धारण प्रवेशित सत्र से अगले सत्र के आधार पर होगा। उदारणार्थ यदि छात्राध्यापक का प्रवेश वर्ष 2018 में होता है तो बैच का नाम 2018–2020 होगा।
6. अंक पत्र पर बैच/सत्र का नाम तथा वर्तमान वर्ष एवं खण्ड का उल्लेख होगा।

शिक्षाशास्त्री परीक्षा योजना –

1. कोई परीक्षार्थी हिन्दी या संस्कृत में प्रश्नों के उत्तर दे सकता है।
2. सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र 100 एवं 50 अंको के होंगे।
   i. प्रत्येक प्रश्न पत्र की लिखित परीक्षा होगी। प्रत्येक 100 अंक वाले प्रश्न पत्र में दो भाग होंगे।

   (क) प्रथम भाग – इसमें 40 अंकों के लघु उत्तरीय प्रश्न रहेंगे (10x4=40), जिसमें चार–चार अंको के दस प्रश्न होंगे। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें कोई विकल्प नहीं होगा।

   (ख) द्वितीय भाग – इसमें 60 अंको के दीर्घ उत्तरीय प्रश्न रहेंगे (4x15=60) जिसमें 15 अंको के चार प्रश्न होंगे। इस भाग में चार खण्ड होंगे, प्रत्येक खण्ड में दो–दो प्रश्न होंगे, जिनमें से एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा।

   ii. प्रत्येक 50 अंक वाले प्रश्न पत्र में भी दो भाग होंगे।

   (क) प्रथम भाग – इसमें 20 अंकों के लघु उत्तरीय प्रश्न रहेंगे (4x5=20), जिसमें पॉच–पॉच अंको के चार प्रश्न होंगे। यह प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें कोई विकल्प नहीं होगा।

   (ख) द्वितीय भाग – इसमें 30 अंको के दीर्घ उत्तरीय प्रश्न रहेंगे (2x15=30) जिसमें 15 अंको के दो प्रश्न होंगे। इस भाग में दो खण्ड होंगे, प्रत्येक खण्ड में दो–दो प्रश्न होंगे, जिनमें से एक प्रश्न करना अनिवार्य होगा।

प्रायोगिक एवं दत्तकार्य तथा अन्य सुसम्बद्ध गतिविधियों के लिए अंको का सेमेस्टर के अनुसार विवरण आगे पाठ्यक्रम प्रारूप में भी वर्णित है।

3. प्रायोगिक परीक्षा, सतत्–व्यावसायिक क्षमता संवर्धन, इन्टर्नशिप तथा दत्त कार्यो एवं अन्य गतिविधियों का मूल्यांकन विभागीय समिति द्वारा किया जायेगा जिसके संयोजक विभागाध्यक्ष होंगें।

4. प्रायोगिक परीक्षा के लिए तीन सदस्यीय परीक्षा परिषद होगी जिसमें दो बाह्य परीक्षक तथा एक आन्तरिक परीक्षक होगा। विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष आन्तरिक परीक्षक के साथ–साथ इस परिषद के संयोजक का कार्य करेंगें।
5. जिन सम्बद्ध महाविद्यालयों में शिक्षाशास्त्र विभागाध्यक्ष का पद नहीं है वहां महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के स्थायी अध्यापकों में से एक को वरीयता क्रम में प्रतिवर्ष परीक्षा संयोजक नामित किया जायेगा। जो अपने महाविद्यालय की शिक्षाशास्त्री प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षा संयोजक तथा आन्तरिक परीक्षक का कार्य करेगा।
6. जिन स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षाशास्त्र विभाग का स्थायी विभागाध्यक्ष विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित नहीं है वहां पर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष आन्तरिक परीक्षक के साथ–साथ इस परिषद के संयोजक का कार्य करेंगे।
7. एक सेमेस्टर से दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा में एक वर्ष से अधिक अन्तराल में परीक्षा अनुमन्य नहीं है। एक वर्ष से दूसरे वर्ष की परीक्षा में दो वर्ष से अधिक अन्तराल में अनुमन्य नहीं है।

उत्तीर्णता के नियम–

1. प्रत्येक प्रश्न पत्र में न्यूनतम 36 प्रतिशत तथा सम्पूर्ण सेमेस्टर में न्यूनतम 40 प्रतिशत प्राप्तांक होने पर ही उत्तीर्ण होगा। इस बाध्यता के साथ ही सैद्धान्तिक, व्यावसायिक क्षमता संवर्धन, इन्टर्नशिप तथा प्रयोगात्मक सभी परीक्षाओं में अलग–अलग पत्रों में स्वतंन्त्र रूप से न्यूनतम 36 प्रतिशत अंक प्राप्त हों।
2. **श्रेणी का निर्धारण**–चतुर्थ सेमेस्टर के ऐसे परीक्षार्थी जो चतुर्थ सेमेस्टर के उत्तीर्ण होने तथा परीक्षाफल प्रकाशन के समय से पूर्व प्रथम खण्ड (प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर) की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुके हों (कोई शैक्षणिक कार्य/गतिविधि अपूर्ण न हो) का दोनो खण्डों के प्राप्तांकों के योग के आधार पर श्रेणी का निर्धारण निम्नवत् होगा–

   प्रथम श्रेणी – 60 प्रतिशत या उससे अधिक
   द्वितीय श्रेणी – 48 प्रतिशत या उससे अधिक तथा 60 प्रतिशत से कम
   तृतीय श्रेणी – 40 प्रतिशत या उससे अधिक तथा 48 प्रतिशत से कम

3. शिक्षाशास्त्री का पाठ्यक्रम अधिकतम चार वर्षो (आठ सेमेस्टर) में पूर्ण करना अनिवार्य है। यदि अधिकतम चार वर्षो (आठ सेमेस्टर) में किसी भी कारण से पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं होता है तो उसका प्रवेश स्वतः निरस्त माना जायेगा। एतदर्थ छात्र को अलग से कोई सूचना नहीं दी जायेगी।
4. शिक्षाशास्त्री प्रथम सेमेस्टर में यदि परीक्षार्थी मात्र एक प्रश्न पत्र में अनुत्तीर्ण/अनुपस्थित होता है तो वह उस प्रश्न पत्र में बैक परीक्षा हेतु अनुमन्य होगा तथा उसकी फलता की स्वयं के जिम्मेदारी के साथ द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षा में सम्मिलित(Carry Forward) हो

07/08/2024 07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

सकेगा। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ऐसे परीक्षार्थी के लिए उनकी बैक परीक्षा हेतु प्रथम सेमेस्टर के वर्ष के अगले वर्ष (तृतीय सेमेस्टर) में मात्र अनुमन्य होगी।

5. यदि छात्र किसी सेमेस्टर का परीक्षावेदन पत्र पूरित कर परीक्षा में पूर्णतया अनुपस्थित है या एक प्रश्न पत्र में अनुर्त्तीण है तो उसे सम्बन्धित सेमेस्टर/प्रश्नपत्र की परीक्षा में पुनः विषम/सम सेमेस्टर के अनुसार सम्मिलित होना होगा।

6. यदि किसी छात्र ने प्रथम सेमेस्टर में अध्ययन करते हुये प्रायोगिक (EPC एवं इन्टर्नशिप) भी पूर्ण किया है, किन्तु किसी कारणवश परीक्षावेदन पत्र पूरित नहीं कर सका तथा परीक्षा से वंचित रह गया ऐसे छात्र तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा में विभागाध्यक्ष/प्रचार्य (सम्बन्धित महाविद्यालय के लिए) की संस्तुति पर कुलपति महोदय की स्वीकृति के उपरान्त निर्धारित परीक्षा शुल्क देकर भूतपूर्व छात्र के रूप में सम्मिलित हो सकेगा। यही नियम द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर पर भी लागू होगा।

7. यदि छात्र EPC एवं इंन्टर्नशिप में अनुर्त्तीण होता है तो वह सम्बन्धित सेमेस्टर में अनुर्त्तीण होगा तो उसको पुनः सम्बन्धित सेमेस्टर में नियमित छात्र की भांती नामांकन कराना होगा। यदि छात्र/छात्रा पुनः अनुर्त्तीण होता है तो उसका प्रवेश निरस्त माना जायेगा।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

शिक्षाशास्त्र विभाग (प्रथम वर्ष)
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम प्रारूप

प्रथम सेमेस्टर

	कोर्स कोड	कोर्स शीर्षक	पूर्णांक	क्रेडिट
शिक्षा के परिप्रेक्ष्य	सैद्धान्तिक कोर्स			
	शि0शा0 101	शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं समसामयिक भारतीय परिप्रेक्ष्य	100	4
	शि0शा0 102	बालविकास एवं शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	100	4
	शि0शा0 103	शिक्षण तकनीकी	100	4
व्यावसायिक क्षमता संवर्धन EPC		1. मौलिक ग्रन्थों का अध्ययन एवं अभिव्यक्ति 2. सूचना एवं संचार तकनीकी (ICT)का व्यावहारिक प्रयोग	25 25	1 1
इंटर्नशिप पूर्व तैयारी (विद्यालय सम्बद्धता/7दिन)		पूर्व माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों का भ्रमण, निरीक्षण, प्रार्थना सभा में सम्मिलित होना, समय सारणी बनाना, सहायक सामग्री का निर्माण	50	2
			400	16

नोट : प्रथम सेमेस्टर के अन्तर्गत व्यावसायिक क्षमता संवर्धन एवं इंटर्नशिप का 100(25+25+50) अंकों का मूल्यांकन Viva-Voce द्वारा विभागाध्यक्ष/विभागीय अध्यापक एवं एक वाह्य परीक्षक द्वारा सम्पादित किया जायेगा।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

शिक्षाशास्त्री (बी.एड) प्रथम वर्ष का सेमेस्टर

प्रथम सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 101

शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक एवं समसामयिक भारतीय परिप्रेक्ष्य

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–**100**

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापक शिक्षा और दर्शन के संम्प्रत्यय और सम्बन्ध को समझ सकेंगे।
2. प्राच्य वैदिक, बौद्ध, जैन, इस्लामिक शिक्षा की अवधारणाओं की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समालोचना कर सकेंगे।
3. समाजीकरण, सामाजिक परिवर्तन, संस्कृति, सामाजिक गतिशीलता के सम्प्रत्ययों और शिक्षा से उनके सम्बन्ध को समझ सकेगे।
4. समसामयिक भारतीय शिक्षा के राजनीतिक, सामाजिक और वैश्विक पक्षों को समझ सकेंगे।
5. मूल्य शिक्षा की अवधारणा को समझ सकेंगे।

इकाई प्रथम – शिक्षा और दर्शन

1. शिक्षा और दर्शन का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र एबं दोनों में परस्पर संबंध।
2. शिक्षा के उद्देश्य, सिद्धान्त, प्रकार–औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक।
3. प्राच्यवैदिक, बौद्ध, जैन एवं इस्लामिक शिक्षा की अवधारणाएं एवं आधुनिक शिक्षा पर उनका प्रभाव।
4. मूल्य–सम्प्रत्यय, प्रकार एवं मूल्योन्मुखी शिक्षा।
5. स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ टाकुर और महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार।

इकाई द्वितीय – शिक्षा और समाज

1. सामाजीकरण: अर्थ, बालक के सामाजीकरण में शिक्षा की भूमिका।
2. समाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में शिक्षा।
3. संस्कृति–तात्पर्य, सांस्कृतिक विकास और शिक्षा।
4. सामाजिक गतिशीलता–अर्थ, शिक्षा की भूमिका।

इकाई–तृतीय – समसाममयिक भारतीय शिक्षा

1. संवैधानिक मूल्यों– समाजवाद, धर्मनिरपेक्षतावाद एवं प्रजातांत्रिक भावना के विकास में शिक्षा की भूमिका।
2. प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण – NCF-2005
   सर्वशिक्षा अभियान, शिक्षा का अधिकार कानून–2009
   कौशल आधारित माध्यमिक शिक्षा।
3. आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का भारतीय शिक्षा पर प्रभाव।
4. जनसंचार साधनों की शिक्षा में भूमिका
   रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, प्रेस और इण्टरनेट।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07.08.2024

सहायक ग्रन्थ –

1. रामशकल पाण्डेय– शिक्षा दर्शन, शारदा पब्लिकेशन।
2. रमन बिहारी लाल– शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार, आर0लाल डिपो प्रकाशन।
3. एल0के0ओड़– शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।
4. कलाम ए.पी.जे.अब्दुल और राजन, वहि सुदंर (1999) इक्कीसवीं सदी का भारत, राजपाल एण्ड सन्स नयी दिल्ली।
5. चोपड़ा रविकान्ता– उभरते समाज में शिक्षक और शिक्षा, एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली।
6. श्री. निवास एस.एन. आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली।
7. रूहेला सत्यपाल (1983) भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
8. शर्मा, आर.के.शिक्षा के दर्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
9. Jayram, N.(1990) Sociology of Education in India. Rawat Pub.Jaipur.
10. S.P.Chaube (1993) Education Philosophy in India] Vikas Publication House, Delhi.
11. Bhatia, K.K.and Purohit, J (1993), Principles and Practices of Education Kalyani Pub,Delhi.
12. Lakshmi, N.1989 Innovation in Education Sterling Pub.New Delhi.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) प्रथम वर्ष

प्रथम सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 102
बालविकास एवं शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र और विधियों को समझ सकेंगे।
2. बाल विकास की अवस्थाओं और बालकों और किशोरों की अवस्थागत समस्याओं को समझ सकेंगे, उनका समाधान कर सकेंगे।
3. बुद्धि के सम्प्रत्यय, प्रकार और परीक्षणों का ज्ञान हो सकेगा।
4. व्यक्तित्वगत विकास के विभिन्न मतों को समझ सकेंगे।
5. संज्ञानात्मकता, अभिप्रेरणा और अन्य मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्ययों की शिक्षा में भूमिका को जान सकेंगे।

इकाई–प्रथम

1. शिक्षा मनोविज्ञान–अर्थ, परिभाषा और अध्ययन की विधियां।
2. शिक्षा और मनोविज्ञान का सम्बन्ध।
3. अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व।

इकाई–द्वितीय

1. बालविकास–प्रकृति एवं अवस्थायें।
2. शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था में शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास का स्वरूप।
3. बालकों और किशोरों की अवस्थागत समस्यायें और उनके समाधान में शिक्षक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. बुद्धि–अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार।
2. बुद्धि के सिद्धान्त– एकतत्व सिद्धान्त, द्वितत्व सिद्धान्त, बहुतत्व सिद्धान्त, समूहकारक सिद्धान्त, त्रिआयामी सिद्धान्त।
3. बुद्धि परीक्षण के प्रकार, उपयोगिता।

इकाई–चतुर्थ

1. व्यक्तित्व–अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार।
2. व्यक्तित्व के विकास में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण की भूमिका।
3. विशिष्ट बालक, अर्थ, प्रकार और उनकी शिक्षा

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

सहायक ग्रन्थ –

1. सिंह, ए.के.शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन।
2. पाठक बी.डी.शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर।
3. गुप्ता, एस.पी., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. सिंह रामपाल मनोविज्ञान के सम्प्रदाय, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
5. भटनागर, एस.,शिक्षा मनोविज्ञान, लीगल बुक डिपो, आगरा।
6. माथुर, एस. शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली।
7. सारस्वत मालती, शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
8. गुप्ता, एस.पी., उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
9. सिंह, ए.के. शिक्षा मनोविज्ञान, बनारसीदास पब्लिकेशन, पटना।
10. भटनागर एवं भटनागर, शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
11. Chauhan, S.S.(2002)] Advanced Educational psychology.
12. Clayton, T.E.(1965) Teaching & learning – A psychological perspective, preventive Hall.
13. Crama, R.M.(1985) The congnitive psychology of Scholl learing, Boston: Little, Browman & Co.
14. Chand, Tara, Educational Psychology, Anmol Publication, New Delhi.
15. Chaube, S.P.Educational Psychology & Educational statistics, Lakshmi, Narain Agrawal, Agra.
16. Mangal, S.K., Educational Psychology Tandon Publication, Ludhiana.
17. Pandey, K.P., Modern concepts of Teaching Behaviour, Vishwavidyalaya Prakashan, Varanasi.
18. Mangal S.K., Shiksha Manovigyan, Bentice-Hall of India.
19. Sharma, R.A., Teachnology of Teaching, Meerut International.
20. Mangal, S.K.Essentials of Educational Psychology, Prentice-Hall of India.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

प्रथम सेमेस्टर
तृतीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 103
शिक्षण तकनीकी

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. शिक्षण के सम्प्रत्यय, शिक्षण के स्तर तथा अनुदेशनात्मक विधियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. अभिक्रमित अनुदेशन, प्रतिमान और शिक्षक–व्यवहार के मूल्यांकन की प्रविधियों को ज्ञात कर सकेंगे।
3. पाठयोजना निर्माण के महत्व एवं प्रकारों को ज्ञात कर सकेंगे।

पाठ्यक्रम

ईकाई–प्रथम

1. शिक्षण – अर्थ, परिभाषा, तत्व एवं प्रकार।
2. शिक्षण विधियॉ, शिक्षणशास्त्र, शिक्षण कौशल, शिक्षण तकनीक।
3. शिक्षक केन्द्रित अनुदेशनात्मक गतिविधियॉ – व्याख्यान, प्रदर्शन, दल–शिक्षण।
4- छात्र केन्द्रित अनुदेशनात्मक गतिविधियॉ (अभिक्रमित अनुदेशन) – अर्थ, प्रकार सिद्धान्त [Linear, Branchi & methetics]
5- वैयक्तिक अनुदेशन प्रणाली PSI [Personalized System of Instruction], कम्प्यूटर सह अनुदेशन CAI [Computer Assisted Instruction]

ईकाई–द्वितीय

1. सूक्ष्म शिक्षण – अर्थ, परिभाषा, इतिहास, अवधारणायें।
2. पाठयोजना – सिद्धान्त और पद्धतियां हरबार्ट, ब्लूम, गारीसन।
3. शिक्षक व्यवहार का मूल्यांकन – फ्लैण्डर्स।

ईकाई–तृतीय

1. शिक्षण के प्रतिमान–अर्थ, अवधारणायें, मूलभूत तत्व, प्रमुख प्रतिमान ब्रूनर सम्प्रत्यय, सम्प्राप्ति प्रतिमान।

2- Online Learning Resources – E journal, E Books.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

सहायक ग्रन्थ :

1. भूषण शैलेन्द्र, कुमार अनिल एवं सिंह पूरन पाल, शिक्षण अधिगम के आधारभूत तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. माथुर, एस.एस. : शैक्षिक तकनीकी, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी.: शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार।
4. Pandey, K.P.:Modern Concept of Teaching behavior, Vishv Vidhyaya Prakashan, Varanasi.
5. Mangal, S.K.:Essentials of Educational Techonogy Prentice Hall of India.
6. Hurlock, E.R.:Child development mcgraus-hill book company, znc, New York.
7. Sharma, R.A.: Technology of Teaching Meerut.
8. Sampath, K.L.: Educational Technology, New Delhi.
9. Sharma, R.A.: Technology of Teaching, International Publishing House, Meerut.
10. Mohenty Laxman: ICT Strategies for School.
11. Chavan, Kishore, Information & Communication.

व्यावसायिक क्षमता अभिवर्द्धक कोर्स EPC

शिक्षक को व्यावसायिक कार्यदक्षता की अभिवृद्धि हेतु शिक्षा सिद्धान्तों, शिक्षण प्रविधियों एवं नवाचारों के ज्ञान के साथ–साथ अपनी संस्कृति परिवेश एवं सूचना एवं तकनीकी के शैक्षिक उपयोग में कुशल होना चाहिए, तभी वह बदलते हुए शैक्षिक परिदृश्य में कार्य–दक्षता के व्यावसायिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है, इस उद्देश्य से शिक्षाशास्त्री के पाठ्यक्रम के प्रत्येक वर्ष में कुछ सहायक कोर्स रखे गये है –

मौलिक ग्रन्थों का अध्ययन एवं अभिव्यक्ति
(Study and Expression of original texts)

–1

पूर्णांक – 25

पाठ्यक्रम के उद्देश्य –

1. स्तरीय ग्रन्थों को खोजने उनका गहन अध्ययन करने और उनमें उपयोगी तथ्यों के अन्वेषण की प्रवृति का विकास करना।
2. ग्रन्थों में वर्णित विचारों घटनाओं, उक्तियों की सटीक और संतुलित व्याख्या की प्रवृति का विकास करना।
3. ग्रन्थोक्त विचारों का सारांश लिखना।
4. ग्रन्थोक्त विचारों का उपयोग लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्तियों में करने की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा –

1. वर्तमान राजनीतिक–सामाजिक समस्याओं पर लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन करना।
2. आत्मकथाओं और विचारपरक ग्रन्थों का अध्ययन।

3. श्री अरविन्द, स्वामी विवेकानन्द, गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गॉधी आदि भारतीय महापुरूषों के शैक्षिक चिन्तन परक ग्रन्थों का अध्ययन समालोचना।
4. प्राचीन और अर्वाचीन साहित्यिक कृतियों का समालोचनात्मक अध्ययन।
5. विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन समालोचना एवं अभिव्यक्ति।

सहायक ग्रन्थ –

विविध विषयों पर लिखे गयो मूल चिन्तन परक ग्रन्थों का अध्ययन ही इस कोर्स का लक्ष्य है। उदाहरणार्थ कुछ ग्रन्थ यहॉ दिये जा रहे हैं।

1. भरतमुनि नाट्य शास्त्र
2. संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य।
3. प्राच्यें साहित्य शास्त्र पर लिखे गये ग्रन्थ
4. महाकवि कालिदास की कृतियां
5. मुंषी प्रेमचन्द्र के उपन्यास
6. महात्मा गॉधी की आत्मकथा
7. जे. कृष्णमूर्ति के व्याख्यान संकलन
8- Cultral Heritage of India-Dr.S.Radha Krishanan
9- Abraham Lincon's-Letter to his son's Teachers.

EPC

क्रेडिट –1

पूर्णांक – 25

सूचना एंव संचार तकनीकी (I C T) का व्यावहारिक प्रयोग

भावी शिक्षकों में सूचना एवं संचार तकनीकी के उपयोग क्षमता का विकास करना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस उद्देष्य की पूर्ति हेतु कम्प्युटर एवं इंटरनेट की कार्यप्रणाली का सामान्य ज्ञान एवं व्यवसायिक उपयोग करने हेतु शैक्षिक गतिविधियां आयोजित करना।

इकाई–1

1. रेडियों और कैसेट्स का उपयोग।
2. दूरदर्शन और विडियोज का उपयोग।
3. पत्र–पत्रिकाओं का उपयोग।

इकाई–2

1. कम्प्यूटर संचालन का व्यावसायिक ज्ञान। Word Processing, Power Point Excel Etc.
2. Effective Browsing of the Internet, Survey of Educational sites.
3. Downloding of Relevant Material.

इन्टर्नशिप (विद्यालय सम्बद्धता)(7 दिन)–

क्रेडिट –2

पूर्णांक – 50

पूर्व माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों का भ्रमण, निरीक्षण, प्रार्थना सभा में सम्मिलित होना, समय सारणी बनाना, सहायक सामग्री का निर्माण

7.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

शिक्षाशास्त्र (बी॰ एड॰) द्वितीय सत्र (वर्ष) का सेमेस्टर

प्रथम सेमेस्टर एवं

द्वितीय सेमेस्टर

द्वितीय सेमेस्टर

शिक्षाशास्त्र विभाग
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
शिक्षाशास्त्री पाठ्यक्रम प्रारूप

द्वितीय सेमेस्टर

	कोर्स कोड	कोर्स शीर्षक	पूर्णांक	क्रेडिट
शिक्षण के परिप्रेक्ष्य	सैद्धान्तिक कोर्स			
	शि0शा0 201	अनिवार्य संस्कृत	100	4
	शि0शा0 202	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र (एक का चयन)	100	4
	शि0शा0 203	अधिगम एवं अधिगम अभिप्रेरणा	50	2
व्यावसायिक क्षमता संवर्धन EPC		1. शिक्षा में अभिनय एवं कला (नाट्य, चित्रकला, रंगोली, संगीत, क्राफ्ट इत्यादि) 2. क्रियात्मक अनुसंधान 3. संस्कृत सम्भाषण	25 25	1 1
इंटर्नशिप पूर्व तैयारी 21 दिन (7+7+7)		पूर्व माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों एवं छात्रों से सम्पर्क एवं 10 10 सूक्ष्म पाठयोजना 10 10 आदर्श पाठयोजना	50	2
			350	14

07/08/2024

07.8.2024

07.08.2024

07/08/2024

द्वितीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 201
अनिवार्य संस्कृत

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यपकों को संस्कृत भाषा के महत्व एंव शिक्षण उद्देश्यों से अवगत कराना।
2. छात्राध्यापकों में संस्कृत कक्षा शिक्षण सम्बन्धी योग्यताओं का विकास करना।
3. छात्राध्यापकों को संस्कृत शिक्षण के लक्ष्यों की सम्प्राप्ति के लिये प्रभावी साधनों विधियों और उपागमों से परिचित कराना।
4. छात्राध्यापकों में संस्कृत के प्रभावी शिक्षण के लिए भाषा कौशल एवं विभिन्न साहित्यिक विधाओं के शिक्षण की क्षमता उत्पन्न करना।
5. छात्राध्यापकों मे सतत एवं प्रभावी मूल्यांकन की क्षमता उत्पन्न करना।

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. संस्कृत भाषा का सांस्कृतिक महत्व एवं अन्य भारतीय भाषाओं से सम्बन्ध।
2. संस्कृत भाषा शिक्षण के उद्देश्यों, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. संस्कृत आयोग और त्रिभाषा सूत्र में संस्कृत का स्थान।

इकाई–द्वितीय

1. संस्कृत की प्रकृति एवं भाषागत विशेषताएं – माहेश्वर सूत्र, संस्कृत की ध्वनियों का वर्गीकरण, प्रमुख धातुरूप, शब्द रूप एवं अनुवाद शिक्षण।
2. उच्चारण की शिक्षा, अशुद्ध उच्चारण के प्रकार, उच्चारण दोष के कारण एवं उनके निवारण के उपाय।
3. वर्तनी की शिक्षा एवं महत्व, वर्तनी दोष के कारण एवं निवारण के उपाय।
4. लेखन शिक्षण के सिद्धान्त, विधियां एवं प्रकार।

इकाई–तृतीय

1. संस्कृत शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त और पद्धतियां–प्रत्यक्ष पद्धति, व्याकरण अनुवाद पद्धति, संरचनात्मक, आगमन–निगमन, आधुनिक सम्भाषण विधियां।
2. सूक्ष्म शिक्षण कौशल एवं पाठयोजना (निर्धारित कौशलों पर)।
3. गद्य, पद्य, व्याकरण शिक्षण की विधियां और सोपान।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/8/2024

इकाई–चतुर्थ

1. संस्कृत में मूल्यांकनः प्राचीन और अर्वाचीन विधियां।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना, महत्त्व एवं प्रकार।
3. दृश्य श्रव्य साधन–वर्गीकरण, प्रयोग, महत्त्व।

ईकाई–पंचम

1. संस्कृत की पाठ्यपुस्तक–विशेषताएं, निर्माण के सिद्धान्त।
2. संस्कृत अध्यापक के गुण एवं सतत कार्य दक्षता के उपाय।
3. संस्कृत शिक्षण में भाषा–प्रयोगशाला का महत्त्व।

सहायक ग्रन्थ –

1. पाण्डेय, रामशकल, संस्कृत शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. मित्तल, संतोष, संस्कृत शिक्षण, आर.एल.बुक डिपो मेरठ 2007।
3. तिवारी भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल, इलाहाबाद 1974।
4. द्विवेदी कपिल देव, रचनानुवाद कोमुदी, आर.बी.प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. कीथ, ए.बी.:संस्कृत साहित्य का इतिहास।
6. उपाध्याय, बलदेव भारतीय साहित्य का अनुशीलन, शारदा मन्दिर, काशी।
7. मिश्र, लोकमान्य, साहित्य शिक्षण विधि, राजस्थान, ग्रंथागार, जोधपुर।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

द्वितीय सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 202
हिन्दी भाषा बोध एंव शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. भावी शिक्षकों में हिन्दी शिक्षण के लिये भाषा सम्बन्धी आधारभूत योग्यताओं का विकास करना।
2. भावी शिक्षकों में आधुनिक शिक्षण विधियों व तकनीकों का हिन्दी शिक्षण में उचित रूप मे प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
3. सहायक सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग की कुशलता का विकास करना।
4. भावी शिक्षकों मे भाषा कौशलों एवं हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम

इकाई – प्रथम

1. हिन्दी भाषा का महत्व – मातृ भाषा एवं राष्ट्रीय भाषा के रूप में।
2. आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास में हिन्दी का स्थान और अन्य भाषाओं से सम्बन्ध।
3. हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम में स्थान।
4. कक्षा शिक्षण के व्यवहार परक उद्देश्यों का लेखन।

इकाई–द्वितीय

1. हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण, वर्णमाला, स्वर, व्यंजन और मात्रायें / देवनागरी लिपि।
2. मुहावरे एवं लोकोक्तियॉं, वर्तनी शिक्षण का महत्व एवं प्रकार वर्तनी एवं वाचन शिक्षण के दोष एवं निवारण के उपाय।

इकाई–तृतीय

1. सूक्ष्म शिक्षण स्वरूप–कौशल एवं पाठयोजना, प्रस्तावना कौशल, प्रश्न कौशल, दृष्टान्त कौशल, पुनर्बलन कौशल, श्यामपट्ट कौशल, व्याख्या एवं समापन कौशल।
2. पाठयोजना–सिद्धान्त, प्रकार एवं सोपान।
3. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।

इकाई–चतुर्थ

1. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त और पद्धतियॉं।
2. गद्य शिक्षण–उद्देश्य, सोपान व विधियॉं।
3. पद्य शिक्षण–उद्देश्य, सोपान व विधियॉं।
4. रचना शिक्षण–महत्व, उद्देश्य व विधियॉं।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

इकाई–पंचम

1. हिन्दी में मूल्यांकन – अभिप्राय, महत्व एवं प्रकार।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना, महत्व एवं प्रकार।
3. हिन्दी की पाठ्य पुस्तक–विशेषताएं एवं निर्माण के महत्व।
4. हिन्दी अध्यापक के गुण एवं सतत् कार्यक्षमता वृद्वि के उपाय।

पुस्तक–

1. गुप्ता, मनोरमा–भाषा शिक्षण सिद्धान्त और प्रविधि।
2. वर्मा, रामचन्द्र–हिन्दी प्रयोग।
3. पाण्डेय, रामसकल–हिन्दी शिक्षण।
4. सफाया, रघुनाथ – हिन्दी शिक्षण विधि।
5. शर्मा लक्ष्मीनारायण – भाषा1 एवं 2 की शिक्षण विधियां।
6. मंगल, उमा–हिन्दी शिक्षण, नई दिल्ली आर्य बुक डिपो।
7. रमन बिहारी लाल (1997) हिन्दी शिक्षण मेरठ, रस्तोगी।
8. क्षत्रिय के.(1968) – मातृ भाषा शिक्षण, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/8/2024

द्वितीय प्रश्न पत्र

English- Understanding and Teaching Methodology
(Optional)
Course Code-202

Credit-04 **Hours:60** **M.M. - 100**

Course Objectives :-

1- To enable student- teachers to teach basic language skills as listening, speaking, reading and writing.
2- To enable them to evaluate teaching skills through modern evaluation techniques.
3- To develop interest in English Literature.

Unit-I

1- Need and importance of English language teaching in school curriculum.
2- Functional, cultural, and literacy roles of English.
3- Aims of English teaching, writing of behavioral aims of classroom teacher with special reference of bloom's taxonomy.
4- Relation with other school subjects.

Unit-II

1- Content and objectives of teaching- learning of English as a first language and second language.
2- Problems in effective teaching of English as a second language in Indian Schools and their possible solutions.

Unit-III

1- Special methods of teaching English and steps of lesson-planning.
2- Methods of teaching, reading Alphabet, Phonic word method, Phrase method, Sentence Method, Intensive and extensive reading.
3- Methods of teaching, writing, drill and practice, spelling and punctuations, creative writing.
4- Objectives and steps of micro and macro lesson planning- Prose, Poetry, Grammar and composition.

Unit-IV

1- Need and Importance of Audio-Visual Aids in English Teaching.
2- Preparation and classification of Audio-Visual Aids.
3- Language Laboratory.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

Unit-V

1- Evaluation in English.
2- Types of Evaluation- Diagnostic Testing, Remedial Teaching. Unit Test, Comprehensive test.
3- Resposibilities of good English Teacher.

Reference Books:-

1- Bhandari and other: Teaching of English.
2- Gurrey, P.Teaching English as a Foreign Language.
3- Yhamas & Wyatt: The teaching of English in India.
4- Menon, T.Kin and Patel, M.S.- The Teaching of English, Acharya Book, Depot, Baroda.
5- Sharma, P.(2011), Teaching of Skills, Teaching and Methods, Delhi, Shipra Publication.
6- Bist, Abha Rani, Teaching of English in India, Vinod Pustak Mandir, Agra.
7- Bandari, C.S. and others (1966) Teaching of English:- A Hand Book for Teachers, New Delhi.
8- Bhatia, K.K.(2006), Teaching and learning English as a foregn language, Ludhiana.

07.8.2024 07.08.2024 07.08.2024

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

इतिहास विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 | घण्टे : 60 | पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. छात्राध्यापकों को इतिहास शिक्षण के महत्व एवं उद्देश्यों से अवगत कराना।
2. छात्राध्यापकों को इतिहास शिक्षण के उद्देश्यों की सम्प्राप्ति के लिये प्रभावी साधनों, विधियों और उपागमों से परिचित कराना।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एकत्व की भावना के विकास में इतिहास की भूमिका से अवगत कराना।
4. इतिहास शिक्षण हेतु सहायक सामग्रियों के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।
5. इतिहास शिक्षण में रूचि उत्पन्न करना।

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में इतिहास शिक्षण की उपादेयता।
2. इतिहास शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का उल्लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों से इतिहास का सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. इतिहास–अर्थ, क्षेत्र एवं प्रकृति–माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार।
2. भारतीय इतिहास–संक्षिप्त परिचय।
3. विश्व इतिहास–माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार।

इकाई–तृतीय

1. इतिहास शिक्षण के सिद्धान्त एंव विधियॉः– व्याख्यान विधि, कहानी कथन विधि, स्रोत विधि, विचार–विमर्श विधि।
2. इतिहास की पाठयोजनाः आवश्यकता, महत्व एंव सोपान–सूक्ष्म एंव समग्र।
3. इतिहास शिक्षण की युक्तियाँ एंव तकनीकें।

इकाई–चतुर्थ

1. इतिहास के पाठ्यक्रम के उपागम एवं सिद्धान्त तथा सावधानियाँ।
2. इतिहास की पाठ्यपुस्तक–अर्थ, आवश्यकता एवं पाठ्यपुस्तक की रचना के सिद्धान्त।
3. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024

इकाई–पंचम

1. इतिहास में मूल्यांकन–अर्थ एवं प्रकार।
2. इतिहास शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्यदक्षता वृद्वि के उपाय।

पुस्तक

1. पाण्डेय, पी.एन.–टिचिंग ऑफ हिस्ट्री।
2. त्यागी, गुरूसरन–इतिहास शिक्षण।
3. घाटे–सजेशन फॉर टीचिंग आफ हिस्ट्री इन इंडिया।
4- Agrawal, J.C.:Teaching of History, New Delhi, Vikas publishing House Pvt.Ltd.
5- Chaudhary K.P.:The Effective Teaching of History, in India, New Delhi, NCERT.
6- Kochar, S.K.:The Teaching of History, Delhi, Sterling publishers.
7- Singh, R.P.:Teaching of History, Meerut, Surya Pub.
8- Tyagi, G.: Teaching of History, Agara, Vinod Pustak Mandir.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 08/08/2024

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

भूगोल विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 **पूर्णांक–100**

कोर्स लक्ष्य –

1. भावी शिक्षकों में भूगोल शिक्षण के महत्व एवं आवश्यकता के विषय में बोध विकसित करना।
2. भूगोल शिक्षण के सामान्य–विशिष्ट उद्देश्यों के विषय में समझ विकसित करना।
3. भूगोल शिक्षण की विभिन्न विधियों से परिचित कराना और उनके उपयोग की क्षमता उत्पन्न करना।
4. क्षेत्रीय भूगोल एवं विश्व भूगोल के बारे में समझ विकसित करना।
5. संश्लेषण– विश्लेषण, तर्क, निर्णय की क्षमताओं का विकास करना।
6. सहायक सामग्री के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में भूगोल शिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व।
2. भूगोल शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों से भूगोल का सम्बन्ध– इतिहास, नागरिकशास्त्र, गणित, विज्ञान, भाषायें आदि।

इकाई–द्वितीय

1. भूगोलः– अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र।
2. भारतीय उपमहाद्वीप एवं विश्व भूगोल का सामान्य परिचय (माध्यमिक विद्यालयी पाठ्यपुस्तक आधारित) तात्कालिक भौगोलिक घटनाएं।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में भूगोल की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. भूगोल शिक्षण के सिद्धान्त एवं विधियाँ – व्याख्यान, विचार–विमर्श, योजना पद्धति, भ्रमण एवं प्रयोगशाला पद्धति।
2. उपर्युक्त शिक्षण विधियों के चुनाव का आधार।
3. भूगोल शिक्षण पाठयोजना की आवश्यकता, महत्व एवं सोपान – सूक्ष्म एवं वृहत्।
4. युक्तियां एवं शिक्षण सूत्र।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

इकाई–चतुर्थ

1. दृश्य श्रव्य साधन–प्रयोग एवं महत्व।
2. भूगोल की पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यपुस्तक समालोचना के आधार।
3. भूगोल शिक्षण में पुस्तकालय एवं संदर्भ पुस्तकों की उपयोगिता।
4. भूगोल कक्ष की सज्जा, आवश्यकता एवं महत्व।

इकाई–पंचम

1. भूगोल में मूल्यांकनः अर्थ एवं प्रकार।
2. प्रश्न पत्र निर्माणः आदर्श प्रश्न पत्र निर्माण के सिद्धान्त।
3. परीक्षण की विधियां एवं तकनीकें, इकाई परीक्षण।
4. आदर्श शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्य दक्षता के उपाय।

सहायक ग्रन्थ–

1. वर्मा, जे.पी.भूगोल– अध्ययन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. आत्मानन्द मिश्र, भूगोल शिक्षण पद्धति।
3. गुरू प्रसाद टण्डन, भूगोल शिक्षण कला।
4. एच.एन.सिंह, भूगोल शिक्षण।
5. Jaida, S.M.Modern Teaching of Geography, New Delhi Sterting Pub.
6. O.P.Verma Geography Teaching.
7. Ch.Orely, R.J.Frontiers in Geography Teaching Agra Sahitya Prakashan.
8. Srivastav, Karnti Mohan: Geography, Teaching, Agra Sahitya Prakashan.
9. Agrawal, K.L.-Teaching of Geography, Ludhiyana Hindi Prakashan.
10. Broadman David-Frontiers in Geography Teaching, Fehua Press, Landon Philodhipha.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

नागरिकशास्त्र विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण के महत्व के विषय में बोध विकसित करना।
2. नागरिकशास्त्र शिक्षण के सामान्य और विशिश्ट उद्देश्यों के विषय में समझ विकसित करना।
3. नागरिकशास्त्र शिक्षण के विधि तंत्र से परिचित कराना और उसमें उपयोग क्षमता विकसित करना।
4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नागरिकता के बारे में समझ विकसित करना।
5. सहायक सामग्रियों के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में नागरिकशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व।
2. नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. नागरिक और नागरिकताः– अर्थ, प्रकृति, अधिकार और कर्तव्य।
2. मनुष्य की आवश्यकतायें और सामाजिक संस्थानों पर निर्भरता।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नागरिक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण की पाठयोजना के सोपान एवं विधियां।
2. सूक्ष्म पाठयोजना (निर्धारित कौशलों पर)।
3. वृहत् पाठयोजना के आधुनिक सोपान।
4. विधियां– व्याख्यान, विचार–विमर्श, योजना, सर्वेक्षण।
5. युक्तियां एवं तकनीकें– संगोष्ठी, कार्यशाला, दत्तकार्य, व्यक्ति अध्ययन, भ्रमण।

इकाई–चतुर्थ

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण मे सहायक सामग्रियों के निर्माण एवं उपयोग का महत्व।
2. पाठ्यपुस्तक की विशेषतायें।
3. आदर्श नागरिकशास्त्र शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्य दक्षता के उपाय।

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

इकाई–पंचम

1. नागरिकशास्त्र में मूल्यांकन।
2. परीक्षण की विधियां एवं आधुनिक तकनीकें, इकाई परीक्षण।

सहायक ग्रन्थ–

1. त्यागी, गुरूशरण दास–नागरिकशास्त्र का शिक्षण।
2. Harlikar- Teaching of Civics in India.
3. Agrwal, J.C.-Teaching of Political Sciences & Civics, New Delhi, Vikas Pub.
4. Shaida B.D.-Teaching of Political Sciences, Jalandhar, Panjab Kitab Ghar.
5. Syed, M.H.-Modern Teaching of Civics, New Delhi, Anmol Publication, Pvt.Ltd.

07.8.2024 07.08.24 07/08/2024

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

अर्थशास्त्र विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4 घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. अर्थशास्त्र शिक्षण के अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व के विषय मे बोध विकसित करना।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण के सामान्य एवं विशिष्ट उद्देश्यों के प्रति समझ विकसित करना।
3. राष्ट्र की आर्थिक समस्याओं के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास करना।
4. अर्थशास्त्र शिक्षण की विधियों एवं मूल्यांकन प्रविधियों से परिचित कराना।
5. अर्थशास्त्र शिक्षण के प्रति रूचि उत्पन्न करना।

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में अर्थशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता।
2. अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अर्थशास्त्र का अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सहसम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. अर्थशास्त्रः– अर्थ, प्रकृति, अधिकार और कर्त्तव्य।
2. भारतीय आर्थिक परिदृश्य के प्रमुख पक्ष एवं समस्याएं–
   मुद्रास्फीति, गरीबी, बेरोजगारी, निजीकरण एवं उदारीकरण की अवधारणा।

इकाई–तृतीय

1. अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियां– व्याख्यान विधि, विचार विमर्श विधि, योजना विधि, सर्वेक्षण, संश्लेषण–विश्लेषण विधि।
2. पाठयोजना–आवश्यकता, सिद्धान्त एवं सोपान–सूक्ष्म एवं वृहत्।
3. अर्थशास्त्र शिक्षण की युक्तियां एवं तकनीकें–
   दत्तकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला, व्यक्ति अध्ययन, भ्रमण।

इकाई–चतुर्थ

1. अर्थशास्त्र शिक्षण में सहायक सामग्रियों के निर्माण एवं उपयोग का महत्व।
2. अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक की विशेषतायें।
3. आदर्श अर्थशास्त्र शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्यदक्षता के उपाय।
4. अर्थशास्त्र में मूल्यांकन– परीक्षण की विधियां एवं आधुनिक तकनीकें, इकाई परीक्षण।

07.8.2024 25 07.08.2024 07/08/2024

इकाई पंचम–

अर्थशास्त्र के निम्नलिखित तत्वों का संक्षिप्त परिचय–

1.W.T.O.(World Trade Organization)

2.उपभोक्ता जागरूकता

3.उपभोक्ता सुरक्षा कानून

सहायक ग्रन्थ–

1. सिंह, रामपाल – अर्थशास्त्र शिक्षण।
2. पाण्डेय, के0पी0 – अर्थशास्त्र शिक्षण।
3. सिंह, एच0एन0 – अर्थशास्त्र शिक्षण।
4. सिंह, आर0पी0 – अर्थशास्त्र शिक्षण।
5. श्री सत्यदेव – अर्थशास्त्र की रूपरेखा।
6. तेला व श्रीवास्तव – अर्थशास्त्र के सिद्धान्त।
7. Agrawal, A.N.& Kundan Lal – Economics of Development & Planning, New Delhi, Vikash Publishing House.
8. Dwivedi D.N.- Principal of Economics, New Dehli, Vikas Pub.
9. Chopra, P.N.- Micro Economics, Kalyani Publisher.
10. Mishra, S.Puri- Indian Economy, New Delhi, Radha Pub.
11. Harma, R.A.- Arthashastra Shiksha, Agra Gyan Prashad & Sons.

07.8.2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024

तृतीय प्रश्न पत्र
कोर्स कोड 203
अधिगम एवं अधिगम अभिप्रेरणा

क्रेडिट–2

घण्टे : 30 पूर्णांक–50

कोर्स लक्ष्य–

1. छात्राध्यापक अधिगम के सम्प्रत्यय सिद्धान्त और कारकों को समझ सकेंगे।
2. संज्ञानात्मक विकास में वैयक्तिक भिन्नता के कारकों की भूमिका को समझ सकेंगे।
3. अधिगम स्थानान्तरण की विधियों को जान सकेंगे।
4. अधिगम आंकलन का सम्प्रत्यय, विधि इत्यादि के बारे में। समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम

इकाई–प्रथम

1. अधिगम सम्प्रत्यय, अधिगम के प्रकार।
2. अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक।
3. अधिगम के सिद्धान्त–थार्नडाईक, पैवलवल, स्किनर, कोहलर।
4. अधिगम स्थानान्तरण–अर्थ, शिक्षा में उपयोगिता।
5. वैयक्तिक भिन्नता – अभिप्राय, शिक्षण में उपयोगिता।

इकाई–द्वितीय

1. सृजनात्मकता– अर्थ, परिभाषा, बुद्धि और सृजनात्मकता का सम्बन्ध, शिक्षा द्वारा सृजनात्मकता बढ़ाने के उपाय।
2. अभिप्रेरणा–अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, महत्व एवं सिद्धान्त और विधियाँ।
3. समायोजन–अर्थ, विशेषतायें, प्रक्रिया एवं समायोजित व्यक्ति की विशेषतायें।

सहायक ग्रन्थ–

1. भूषण शैलेन्द्र, कुमार अनिल एवं सिंह पूरन पाल, शिक्षण अधिगम के आधारभूत तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
2. शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोविज्ञान का परिप्रेक्ष्य, रमन बिहारीलाल, सुनीता पलोड।
3. Pandey K P Mordern concept of teaching behavior, vishv vidyalaya prakashan, Varanasi.

07/8/2024 07.8.2024 07.08.2024 07/08/24

द्वितीय प्रश्न पत्र

कोर्स कोड 202

नागरिकशास्त्र विषय बोध एवं शिक्षण विधि (वैकल्पिक)

क्रेडिट–4

घण्टे : 60 पूर्णांक–100

कोर्स लक्ष्य –

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण के महत्व के विषय में बोध विकसित करना।
2. नगरिकशास्त्र शिक्षण के सामान्य और विशिश्ट उद्देश्यों के विषय में समझ विकसित करना।
3. नगरिकशास्त्र शिक्षण के विधि तंत्र से परिचित कराना और उसमें उपयोग क्षमता विकसित करना।
4. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नागरिकता के बारे में समझ विकसित करना।
5. सहायक सामग्रियों के निर्माण और उपयोग की क्षमता का विकास करना।

इकाई–प्रथम

1. विद्यालयी विषय के रूप में नागरिकशास्त्र शिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व।
2. नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य, कक्षा शिक्षण के व्यवहारपरक उद्देश्यों का लेखन।
3. अन्य विद्यालयी विषयों के साथ सम्बन्ध।

इकाई–द्वितीय

1. नागरिक और नागरिकता:– अर्थ, प्रकृति, अधिकार और कर्तव्य।
2. मनुष्य की आवश्यकतायें और सामाजिक संस्थानों पर निर्भरता।
3. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नागरिक की भूमिका।

इकाई–तृतीय

1. नागरिकशास्त्र शिक्षण की पाठयोजना के सोपान एवं विधियां।
2. सूक्ष्म पाठयोजना (निर्धारित कौशलों पर)।
3. वृहत् पाठयोजना के आधुनिक सोपान।
4. विधियां– व्याख्यान, विचार–विमर्श, योजना, सर्वेक्षण।
5. युक्तियां एवं तकनीकें– संगोष्ठी, कार्यशाला, दत्तकार्य, व्यक्ति अध्ययन, भ्रमण।

इकाई–चतुर्थ

1. नगरिकशास्त्र शिक्षण मे सहायक सामग्रियों के निर्माण एवं उपयोग का महत्व।
2. पाठ्यपुस्तक की विशेषतायें।
3. आदर्श, नागरिकशास्त्र शिक्षक के गुण एवं सतत् कार्य दक्षता के उपाय।

07·8·2024 07.08.2024 07/08/2024 07/08/2024